PROF. C. LAKSHMANNA: I wanted to know in terms of dollars and in terms of foreign exchange.

SHRI JAGDISH TYTLER: I have not calculated this. If the hon. Member is very keen, I will get this calculated and furnish the information.

*305. [*The questioner (Shrimati Suryakanta Jayawantrao Patil) was absent. For answer* vide *col.* 34 infra.]

*306. [*The questioner (Shri Kamal Morarka) was absent. For answer* vide *cols.* 34-35 infra.]

*307. [*The questioners (Dr. Ratnakar Pandey and Shri Chandrika Prasad Tripathi) were absent. For answers* vide *col.* 35 infra.]

गेहूं उत्पादन के प्रदर्शन

*308. सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा :†
श्री राम जेठमलानी :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि शोध संस्थानों ने सफल प्रदर्शन करके यह साबित कर दिया है कि देश में विभिन्न किस्मों के गहूं का उत्पादन बढ़ाकर 50 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक किया जा सकता है ;

(ख) क्या यह भी सच है कि देश में गेहूं का प्रति हैक्टेयर सामान्य उत्पादन इस स्तर से बहुत कम है ;

(ग) यदि हां, तो इसका प्रति हैक्टेयर सामान्य उत्पादन कितना है ; और

(घ) कृषि की इस सफल आधुनिक उत्पादन पद्धति से आम किसान को परिचित कराने के लिये कृषि मंत्रालय द्वारा ऐसी योजनाओं को कहां-कहां क्रियान्वित किया गया है ?

†सभा में यह प्रश्न सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा द्वारा पूछा गया ।

कृषि मंत्री (श्री भजन लाल) : (क) से (घ) विवरण सभा के पटल पर रखा गया है ।

विवरण

(क) जी हां । अनुकूल कृषि जलवायु और लागतों के मौजूदा होने पर गहूं की विभिन्न किस्मों की 50 क्विंटल/हैक्टेयर तक पैदावार क्षमता का प्रदर्शन किया गया है ।

(ख) जी हां । देश में गेहूं की प्रति हैक्टेयर सामान्य पैदावार 50 क्विंटल से कम है क्योंकि देश के सभी क्षेत्रों में गेहूं की खेती अनुकूलतम कृषि जलवायु और लागतों के तहत नहीं की जाती है।

(ग) वर्ष 1986-87 के दौरान देश में गेहूं की प्रति हैक्टेयर सामान्य पैदावार 19.98 क्विंटल थी ।

(घ) देश के 48 जिलों में राष्ट्रीय प्रदर्शन प्रायोजना अमल में लाई जा रही है । इस प्रायोजना में शामिल किए गए जिलों का ब्यौरा संलग्न है । [देखिए परिशिष्ट 1481, अनुपत्र सख्या-117] देश के सभी गेहूं उगाने वाले जिलों में मिनिकीट बांटे जाते हैं ।

SHRI RAM JETHMALANI: Sir, I have just read the answer and...

MR. CHAIRMAN: First name is of the General. He is present now.

SARDAR JAGJIT SINGH AURORA: Let him ask the first question. Then I will ask.

SHRI RAM JETHMALANI: Sardarji has kindly yielded to me.

THE MINISTER OF STEEL AND MINES (SHRI MAKHAN LAL FOTEDAR): You cannot decide. It is for the Chair to decide.

SHRI RAM JETHMALANI: If Sardarji wants to ask first question I am prepared to sit down.

Sir, the disparity between 50 quintals which can be achieved and 19.98 quintals which is the average achievement, this is a matter of very serious concern. This shows that our stock is completely in a primitive condition and all our claims of technological development are merely an eyewash. I want to ask whether any serious study has been undertaken by the Government to find out what has been achieved in the experimental stage, whether modern technology can be transferred to the vast agricultural tracks in the country. If so, who has undertaken this study, when is the study going to be completed and what are its conclusions? In this connection, I want to draw the attention of the hon. Minister that recently there was a conference in Hissar district of the Haryana Agriculture University. 400 wheat scientists were present but the newspapers report that the directors of agriculture of all the wheat producing States were absent and conspicuously absent. This shows the callous neglect of technology, we have to import wheat at far higher prices and instead of good wheat we get pest-infested wheat about which there was a talk in this House yesterday. So, please tell us, what study you have undertaken to transfer this technology into actual operation.

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, यह अध्ययन नेशनल लेवल पर चलता है और इस समय हिन्दुस्तान में 48 जिलों में इस प्रकार के प्रोग्राम हमने चला रखे हैं ताकि किसानों को पूरी जानकारी दी जा सके साथ ही साथ किसानों को कुछ ऐसा लगे कि फलां किसान के एक हेक्टेयर में 50 क्विंटल गेहूं होते हैं तो मेरे क्यों नहीं । उनका भी ध्यान उत्पादन बढ़ाने की ओर जायेगा । उसके लिए समय-समय पर ऐसे प्रदर्शन होते रहते हैं और उसके साथ साथ बकायदा इस प्रदर्शन के लिए सरकार उनको थोड़ी सहायता भी देती है 200 रुपये एकड़ के हिसाब से । जैसा इन्होंने कहा कि अभी एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटीज की कान्फरेंस हुई थी उसमें डायरेक्टर एग्रीकल्चर नहीं पहुंचे । यह इत्तला मेरे पास नहीं है कि डायरेक्टर एग्रीकल्चर वहां नहीं पहुचे । अगर उनको बुलाया गया था तो उनको वहा जानी चाहिए था । आगे के लिए सब स्टेट्स से कहूंगा कि जहां कहीं भी ऐसे सम्मेलन हों तो उन सम्मेलनों में एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट को भाग लेना चाहिए ताकि लोगों को, किसानों को पूरा ज्ञान, पूरी जानकारी वहां से मिल सके ।

श्री राम जेठमलानी : जनाब, मिनिस्टर साहब मेरे सवाल का जवाब नहीं दे रहे हैं । I am asking what study has been undertaken into the technological aspects and why is this technology not being transferred to the actual operations of agriculture in our country? Merely saying that in 43 districts you have given some instructions is not enough. Please tell us what are the difficulties in transferring this technology and using this technology in the actual field conditions? I want an answer to that question.

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, मैंने अभी बताया है, लेकिन जेठमलानी साहब ने कह दिया कि मंत्री जी ने जवाब ठीक नहीं दिया । लेकिन मैंने जवाब ठीक नहीं दिया या उनकी समझ में कम आया, मैं नहीं कह सकता । मैं यह तो नहीं कहता कि वे कम समझे क्योंकि वह अपने आपको बहुत लायक वकील समझते हैं ... (**व्यवधान**)

श्री राम जेठमलानी : आप जैसी समझ होती तो हम भी मिनिस्टर हो जाते ।

श्री भजन लाल : हमारी जैसी आप में कैसे हो सकती है लेकिन मैं उस बात में नहीं जाना चाहता । आपकी समझ बहुत ज्यादा हो सकती है । लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि हर जिले में हमने चार-चार साइंसदां रखे हुए हैं ताकि किसानों को पूरी जानकारी दी जा सके । दो सौ रुपये प्रति एकड़ हम उनको सहायता दे रहे हैं और उनको पूरी जानकारी भी दे रहे हैं । जो हम दो सौ रुपये सहायता दे रहे हैं वह पांच सौ रुपये प्रति हेक्टेयर

तक हो जाती है । इसमें यूनिवर्सिटी, आई० सी० ए० आर० और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट के और अन्य सारे महकमें समय-समय पर किसानों के फील्ड में जाकर बताते हैं कि कौन-कौन बीज बोना चाहिए, किस समय बोना चाहिए, कितनी इसमें ईल्ड होगी, कितनी इसमें खाद डालनी चाहिए और कब स्प्रे करना चाहिए । ये सारी जानकारियां किसानों को दी जाती हैं । लेकिन आपने एवरेज की बात कही है । एवरेज सारे मुल्क के हिसाब से लिया जाता है । कुछ एरियाज ऐसे हैं जहां पानी है, कुछ एरियाज ऐसे हैं जहां पर बैरानी गेहूं बोया जाता है और कुछ एरियाज ऐसे हैं जहां पर दूसरा गेहूं बोया जाता है पानी की कमी की वजह से । सारे मुल्क का एवरेज 26 क्वींटल प्रति हैक्टेयर है । सारे मुल्क को देखकर एवरेज लिया जाता है । अगर हम पंजाब का लगायें या हरियाणा का लगायें तो यह ज्यादा है । सारे मुल्क के हिसाब से ही मैंने आपको बताया है ।

SHRI RAM JETHMALANI: The hon. Minister has said that this scheme is operative in 43 districts. Please tell us whether there is any proposal to extend it to other districts in the near future; and if so, to how many districts?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, मैंने अभी बताया है कि 48 जिलों में चालू है और यह प्रोग्राम दो साल से लगातार चल रहा है । जिन जिलों में यह शुरू किया गया है उनमें ज्यों ही यह खत्म होगा, उसके बाद दूसरे जिलों का चयन किया जाएगा और वहां पर काम स्टार्ट किया जाएगा । उसमें हो सकता है अगले साल कुछ जिलों में काम शुरू हो ।

सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा : चेयरमैन साहब, मिनिस्टर साहब अभी कह रहे थे कि पंजाब और हरियाणा में जो पदायश है वह बहुत ज्यादा है । मैं उनसे यह पूछना चाहता हूं कि क्या वे यह बता सकते हैं कि पंजाब और हरियाणा में अभी जो पैदायश है उसका एवरेज कितना है । यह मेरे क्वेश्चन का पार्ट "ए" है और पार्ट "बी" में मैं यह जानना चाहता हूं कि ये जो 48 डिस्ट्रिक्ट्स आपने बताये हैं इनमें कब काम शुरू किया गया और इनमें कितनी कामयाबी मिली है और पार्ट "सी" में मैं पूछना चाहता हूं कि जिसको आप मिनी किट बोलते हैं और इसको किसानों को देते हैं, इसमें क्या चीज होती है और क्या यह कोई जादू है, इसमें क्या होता है ?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, 1985–86 के आंकड़े हमारे पास हैं । जहां तक औसत का सवाल है, हरियाणा का औसत 30.9 यानी 31 क्वींटल प्रति हेक्टेयर है और प्रदर्शनी में आया है 50 क्वींटल प्रति हेक्टयर । पंजाब का जो एवरेज है वह 35 31 है और जो प्रदशनी में आया है वह 54 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है ।

सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा : इन 48 डिस्ट्रिक्ट्स मे कब से काम शुरू किया गया है और अभी तक कितनी कामयाबी हुई है यह बता दीजिए ?

श्री भजन लाल : मैंने अर्ज किया कि यह प्रोग्राम शुरू से चल रहा है । मेरे पास आंकड़े हैं 83–84, 84–85 और 85–86 के । लेटेस्ट जो 1985–86 के आकड है वह मैंने बताया कि 1985–86 में पजाब का एवरेज 35.31 है ।

सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा : माफ करना । यह जो आप यूनिवर्सिटीज के नीचे रिसर्च एन्ड डेवलपमेंट कर रहे हैं इसमें आपको क्या कामयाबी हुई है । क्योंकि ये जो 48 डिस्ट्रिक्ट्स हैं उनके साथ यूनिवर्सिटीज का नाम दिया हुआ है । उन्होंने इसमें क्या बातें की हैं जिससे यह चीज बढ़ सकती है ? मिनि किट क्या है, इसमें क्या है जिससे लोगों को फायदा हो सकता है । मिनि किट मैं समझा नहीं कि इसका क्या मतलब होता है ?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, जहां बाढ़ आ जाय या सूखा पड़ जाय तो यह छोटे किसानों को मिनि किट दिया जाता है ।

श्री सभापति : मिनि किट में क्या होता है?

श्री भजन लाल : मिनि किट में खाद और बीज मुफ्त सप्लाई किये जाते हैं।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : क्या माननीय कृषि मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि जो 48 जिले उन्होंने छांटे है उसका बेसिस क्या है? जहां गेहूं ज्यादा पैदा होता है या जहां बिलकुल पैदा नहीं होता ? इसका बेसिस क्या है? दूसरा, जो हिसार एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी और लुधियाना एग्रोकल्चर यूनिवर्सिटी है उन दोनों का अलग अलग गेहूं का, व्हीट का प्रति हेक्टेयर प्रोडक्शन क्या है?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, मैंने अभी बताया कि गेहूं के लिए वही प्रदेश छांटे जायेंगे, वही जिले छांटे जायेंगे जहां गेहूं पैदा होता है। जहां गेहूं ही पैदा नहीं होता उसको छांटने का कोई मतलब नहीं है। इन जिलों को छांटने का तरीका क्या है? बाकायदा यूनिवर्सिटी में बैठकर, हर डिस्ट्रिक्ट में चार-चार वैज्ञानिक है, आई.सी.ए.आर. की तरफ से, वे बैठकर डिस्कस करते हैं कि किन जिलों को छांटा जाना चाहिये। हर साल 65-70 किसानों को हर एक जिले से छांटा जाता है कि इन इन किसानों के खेतों में नमूने के तौर पर प्रदर्शन किया जाएगा। यह प्रोग्राम है।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : मान्यवर, मेरे दूसरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया और पहले प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि जहां गेहूं पैदा होता है उनको छांटा जाता है। उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा गेहूं पैदा होता है बुलन्दशहर में और न. 2 में गेहूं पैदा होता है अलीगढ़ में।

श्री जगेश देसाई : न. दो का कैसे हो सकता है?

SHRI VIRENDRA VERMA: The 1st highest wheat-producing district in Uttar Pradesh is Bulandshahr and the second district is Aligarh. None of these has been selected.

मेरा कहना यह है। दूसरा मान्यवर, मैंने यह भी पूछा था कि हिसार कृषि विश्वविद्यालय और लुधियाना कृषि विश्वविद्यालय में गेहूं की प्रति हेक्टयर पैदावार क्या है।

श्री सभापति : आपके पास सूचना है तो बतलाइये वैसे इस सवाल से संबंधित नहीं है।

श्री भजन लाल : सभापति महोदय मैं उत्तर प्रदेश के बारे में बताना चाहता हूं।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : मैं हिसार और लुधियाना विश्वविद्यालयों के बारे में जानना चाहता हूं।

श्री भजन लाल : उत्तर प्रदेश के बारे मे इन्होंने पूछा है। कानपुर...और जिले भी।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : मैं बुलन्दशहर और अलीगढ़ का पूछ रहा हूं।

श्री भजन लाल : फतेहपुर, शाहजहांपुर, रामपुर, सुल्तानपुर, बलिया उत्तर प्रदेश के है।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : सब देख चुका।

श्री भजन लाल : आप सब देखना चाहते है। बतलाइये मुझे, सब देख लिया बाकी क्या देखना चाहते हैं?

श्री वीरेन्द्र वर्मा : हसकर क्यों जवाब दे रहे है। सभापति महोदय, मंत्री महोदय कह रहे है कि जहां गेहूं पैदा होता है उन जिलों को सलेक्ट किया जाता है इस पर मैंने यह बताया कि उत्तर प्रदेश में फर्स्ट व्हीट प्रोडयूसिंग डिस्ट्रिक्ट बुलन्दशहर है और सेकेंड अलीगढ़ है और दोनों

इसमें नहीं हैं। इस कारण मैं पूछ रहा हूं।

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, मुश्किल तो यह है कि वर्मा साहब को हंस कर जवाब दें तो उनको तकलीफ होती है और थोड़ा सा वैसे कह दे, जोर से, तो वे नाराज हो जाते हैं। अब मैं नार्मल हालत में जवाब देता हूं ताकि इनको शिकायत न हो।

बुलंद शहर और अलीगढ़ का इन्होंने जिक्र किया, जब दुबारा से प्रोग्राम बनेगा तो बुलंदशहर और अलीगढ़ का भी ध्यान रखा जायेगा।

श्री सभापति : वे हिसार और लुधियाना यूनिवर्सिटी का पूछ रहे थे। वह इससे तो नहीं उठता है लेकिन अगर आप बता सकते हैं तो बता दीजिए।

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, मेरे पास सारे आंकड़े है जिस जिले का ये पूछना चाहते हैं...

श्री सभापति : ये हिसार और लुधियाना यूनिवर्सिटी की पूछ रहे है।

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, जब छांटते हैं तो प्रदेश का एवरेज निकालते हैं, अलग से यूनिवर्सिटीज का एवरेज नहीं निकालते है यूनिवर्सिटी में जो प्रदर्शन करते हैं और यूनिवर्सिटी का तो अलग एवरेज हैं। अगर यूनिवर्सिटी का लें तो वह और भी फालतू हो सकता है। लेकिन उसमें कह सकते है कि सारे विशेषज्ञ बैठकर सारा कुछ देखकर करते हैं लेकिन यह तो किसानों का है और यह सारी स्टेट की एवरेज है, यूनिवर्सिटी की एवरेज नहीं है। क्योंकि यह सवाल भी इल्ड के बारे में है यूनिवर्सिटी के बारे में नहीं है।

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: According to the demonstration plot details, it gives 50 quintals per hectare. What is the cost of production in the demonstration plot?

The second thing is, it appears that the farmers are not able to produce such a quantity. They are producing only 19.98 quintals for lack of resources and inputs. What steps are being taken by the Government to provide all the inputs and research benefits so that the enterprising farming community of this nation rises to the level of the demonstration plots to produce 50 quintals per hectare?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, यह जो मैंने एवरेज बतायी है 19.98 यानी 20 क्विंटल यह सारे देश की है, किसी एक प्रदेश की नही है, जैसा कि मैंने कहा भी कि पंजाब और हरियाणा की लें तो ज्यादा है 31 हरियाणा और 35 पंजाब उनके अकेले की है। लेकिन आज मुल्क में 23 मिलियन हेक्टेयर में गेहूं की फसल होती है और उस 23 मिलियन में से 5 मिलियन हैक्टेयर ऐसा है जो सिंचित नहीं है। अब जहां सिंचाई की 100 परसेंट गारंटी नहीं है वहां भी लोग गेहूं बोते है और कुछ एरिया ऐसे है जहा गेहूं को छः सात दफा पानी फसल पकने तक दिया जाता है। लेकिन कुछ एरिया ऐसा है जहां मुश्किल से 3 दफा पानी मिलता है। इसलिए जो एवरेज है वह कम है। सब जगह पूरा पानी नहीं है। पूरा पानी नहीं है इसलिए खेत में किसान पूरी खाद नहीं डालता है। खाद डालता है तो उनको पानी ज्यादा डालने की आवश्यकता होती है, यह तो आप जानते ही है सभापति महोदय, इसलिए यह दिक्कत है। हमारी कोशिश यह है कि किसानों को अच्छा बीज, अच्छी खाद, समय पर पानी और ट्यूबवेल के लिए बिजली दी जाये। उसके लिए भारत सरकार ने बाकायदा प्रोग्राम बनाये है। इन प्रोग्रामों में टाइम तो लगेगा लेकिन हमारी कोशिश यह होगी कि उत्पादन ज्यादा से ज्यादा इस मुल्क में बढ़े।

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: The cost of production in the demonstration plots, he has not mentioned.

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, कास्ट आफ प्रोडक्शन के बारे में जो इन्होंने कहा है कि खेती करने पर लागत कितनी आती है तो वह अलग हिसाब है। जो हम किसान को रपोर्ट प्राइस देते हैं, भाव तय करते हैं किसान का उस समय कास्ट आफ प्रोडक्शन जो कि 3200 रुपए तकरीबन प्रति हैक्टेयर आती है लगाकर भाव तय करते हैं।

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: The Minister is talking something different from what I asked. I asked a specific question: what is the cost of production as far as wheat is concerned in the demonstration plots?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय हम 500 रुपये प्रति केयर सहायता के तौर पर सब्सिडी किसानों को दे हैं।

श्री सभापति : डिमांस्ट्रेशन प्लाट्स जो आपने बनाये हैं उनके बारे में पूछ रहे हैं।

श्री भजन लाल : मैं उनके बारे में जिक्र कर रहा हूं। उनको 500 रुपया प्रति हेक्टेयर सरकार की तरफ से देते हैं और बाकी किसान ने अपनी मेहनत करनी होती है जो आम किसान करता है। सरकार की तरफ से उसको 500 रुपये देते हैं प्रति हेक्टेयर।

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: I seek your protection, Sir. I seek the protection of the Chair. What is the cost of production in the demonstration plots.

श्री भजन लाल : 500 रुपया सरकार देती है बाकी के किसान खुद खर्च करता है। सरकार जो मदद करती है वह 500 रुपये की है।

DR. YELAMANCHILI SIVAJI: I do not want the subsidy component. I want to know the cost of production.

श्री भजन लाल: कास्ट आफ प्रोडक्शन का इसमें क्या मतलब है। लेकिन भाव तय करते समय कास्ट का हिसाब लगाया जाता है जोकि प्रति हैक्टेयर 3200 रु. अन्दाजन बैठती है।

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir only one small question I would like to put to the Minister. About research, I would like to put a question.

MR. CHAIRMAN: Put quickly.

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, research is being done by universities and by departments. But it is not reaching the farmer in time. It takes seven years, six years. What steps is the Government taking in regard to wheat production so that research benefits reach the farmers in time?

श्री भजन लाल : सभापति महोदय, देश में आई.सी.ए.आर...युनिवर्सिटी कृषि विभाग के सब वैज्ञानिक जाकर बतलाते हैं, जानकारी देते हैं। उसीका नतीजा है कि इतना उत्पादन बढ़ा है।

MR. CHAIRMAN: Question Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

ग्रुप हाउसिंग सोसाइटियों को निर्माण कार्यों के लिए अनुमति

*301. **श्री ईश दत्त यादव** : क्या **शहरी विकास** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि ग्रुप हाउसिंग सोसाइटियों की फैडरेशन ने दिल्ली में ऊंची इमारतें बनाने के प्रस्ताव का विरोध किया है ;

(ख) यदि हां, तो सरकार द्वारा 17 ग्रुप हाउसिंग सोसाइटियों की निर्माण योजनाओं के संबंध में, जो दिल्ली नगर कला आयोग तथा अग्निशमन विभाग द्वारा अनुमोदित कर दी गई थीं तथा जो दिल्ली विकास प्राधिकरण के तत्कालीन उपाध्यक्ष द्वारा उनके मंत्रालय को भेज दी गई थी, दिल्ली विकास प्राधिकरण को अभी तक निदेश जारी न किए जाने के क्या कारण हैं; और